हिंदी साहित्य का इतिहास
भक्तिकाल

Presentation By

Department of Hindi

Pandaveswar college

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल

(1375–1700)

स्वर्णयुग

1. सामान्य परिचय एवं प्रमुख प्रवृतियां
2. संत काव्य
3. सूफी काव्य
4. राम काव्य
5. कृष्ण काव्य

भक्तिकाल

- निर्गुण भक्ति धारा
  - ज्ञानाश्रयी शाखा
  - प्रेमाश्रयी शाखा
- सगुण भक्ति धारा
  - रामभक्ति शाखा
  - कृष्ण भक्ति शाखा

भक्तिकाल के मुख्य कवि और रचनाएँ

1. **निर्गुण भक्ति काव्य**

ज्ञानाश्रयी शाखा
(संत काव्य)
कबीर, नानक, दादू आदि

प्रेमाश्रयी शाखा
(सूफी काव्य)
जायसी, मंझन, कुतुवन आदि

2. **सगुन भक्ति काव्य**

रामभक्ति शाखा (रामाश्रयी शाखा)
(राम काव्य)
तुलसीदास, नाभादास, आदि

कृष्णभक्ति शाखा (कृष्णाश्रयी शाखा)
(कृष्ण काव्य)
सूरदास, नंददास, मीराबाई आदि

निर्गुण काव्य

ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि

1. रामानंद- संत मत के प्रचार-प्रसार का श्रेय इन्हें प्राप्त है। रचनाएँ -
    1. वैष्णवमताब्ज (संस्कृत)
    2. श्री रामर्चन पद्धति (संस्कृत)
    3. सिद्धान्तपटल (हिन्दी)
    4. ज्ञानलीला (हिन्दी) आदि।
2. कबीर- ज्ञानाश्रणी शाखा के अग्रणी/श्रेष्ठ कवि।

    रचनाएँ - बीजक - 'साखी, सबद, रमैनी' तीन भागों में विभक्त। साखी दोहो में है, सबद-रमैनी गेय पद हैं।

निर्गुण कवि– कबीर एवं जायसी

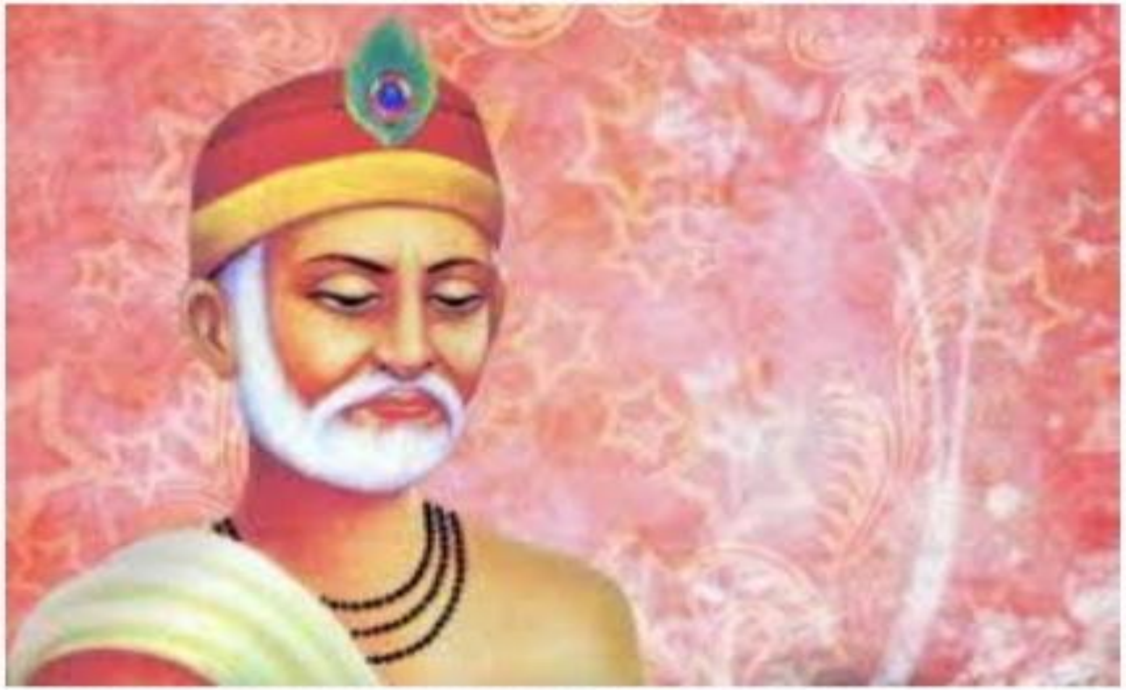

3. **गुरुनानक - सिक्खों के धर्म गुरु**

रचनाएँ - 1. जपुजी, 2. आसादीवार, 3. रहिरास, 4. सोहिला

4. **रैदास** - कोई ग्रंथ नहीं, मात्र फुटकल रचनाएँ पद रुप में है, संतबानी में बानी के नाम से संगृहित हैं।

5. **दादूदयाल** - इन्होंने दादू पंथ के नाम से एक अलग पंथ चलाया। इनके दो शिष्यों संतदास और जगनदास ने 'हरडेवानी' नाम से इनकी रचनाओं को संग्रहित किया, जो बाद में 'अंगवधू' के नाम से रज्जब द्वारा संपादित की गई।

6. **सुंदरदास** - निर्गुण संत कवियों में सर्वाधिक सुशिक्षित एवं शास्त्रज्ञ। य दादूदयाल के शिष्य थे।

प्रसिद्ध ग्रंथ - **सुंदर विलास**

प्रेमाश्रयी शाखा के मुख्य कवि (सूफी काव्य धारा के कवि)

1. **कुतुबन** - मृगावती (1503), भाषा- अवधी, दोहा- चौपाई छंदों में रचित। शैली में सरलता, प्रवाह और सरसता है।

2. **मलिक मुहम्मद जायसी** - 1. अखरावट, 2. पद्मावत, 3. आखिरी कलाम (मुख्यत: 3 रचनाएँ)

पद्मावत - प्रसिद्ध ग्रंथ, भाषा- अवधी

3. **मंझन** - मधमालती - मनोहर और मधमालती की प्रेमकथा पर आधारित ग्रंथ।

4. **उस्मान** - चित्रावली - सुजान और चित्रावली चित्रदर्शनजन्य के जन्य प्रेम का निरुपण हुआ है।

5. **नंददास** - रुपमंजरी - रुपमंजरी और कृष्ण के प्रेम का स्वच्छंद वर्णन। वैवाहिक बंधनों का विरोध एवं परकीया भाव की स्थापना कवि का उद्देश्य। शैली- दोहा - चौपाई, किन्तु भाषा - ब्रजभाषा है।

सगुण भक्ति की राम भक्ति शाखा

मुख्य कवि (रामाश्रयी शाखा)

1. **तुलसीदास** - रचनाएँ - दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस, विनयपत्रिका, रामललानहछू, पार्वतीमंगल आदि। (भगवान शंकर ने रामचरितमानस की पूरी कथा देवी पार्वती को सुनाई थी)
2. **नाभादास** - 'भक्तमाल' - एतिहासिक महत्व
3. **प्राणचंद चौहान** - 'रामायण महानाटक' (संवाद)
4. **केशवदास** - कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामचंद्रिका आदि
5. **सेनापति** - 'कविरत्नाकर' इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है।

सगुण कवि– सूरदास एवं तुलसीदास

सगुण भक्ति की कृष्ण भक्ति शाखा
(कृष्णाश्रयी शाखा)

मुख्य कवि

1. **वल्लभाचाय** - पूर्वमीमांसा भाष्य, उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र भाष्य, सुबोधिनी टीका, तत्त्वदीप निबंध आदि।
2. **सूरदास** - प्रमुख कवि - सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी (श्रृंगार तथा वात्सल्य के कवि)
3. **नंददास** - रासपंचाध्यायो (प्रमुख रचना, प्रसिद्धी का आधार) सिद्धान्त पंचाध्यायो, रुप मंजरी, रस मंजरी आदि।
4. **कृष्ण दास** - जुगमान चरित
5. **मीराबाई** - गीत गोविंद टीका, रास गोविंद, राग सोरठा के पद
6. **रसखान** - प्रेमवाटिका
7. **रहीम** - रहीम दोहावली, बखै नायिका भेद, श्रृंगार सोरठा, खेल कौतुकम (ज्योतिष ग्रंथ)।

भक्तिकालीन साहित्य का सारांश

भक्तिकालीन साहित्य में लोक मंगल की भावना भी निहित है। यद्यपि 'सूर' ने लोकमंगल की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया और वे कृष्ण के लोकरंजन, मधुर और लीलामय रूप में ही मग्न रहे, परन्तु सम्पूर्ण रूप से भक्ति साहित्य में लोकमंगल की भावना प्रमुख है। ये कवि भक्त होने के साथ–साथ समाज सुधारक और जननायक थे। जायसी, कबीर और तुलसी के काव्य में समाज को महान सन्देश दिये गए हैं। तुलसीदास के विषय में आचार्य शुक्ल के शब्द अक्षरशः सत्य हैं–'भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते है, तो इसी महानुभाव (तुलसी) को ही।' इस काल के कवि भक्त, समाज सुधारक लोकनायक एवं भविष्यद्रष्टा थे। कविता के संबंध में तुलसी के शब्दों में उनका आदर्श था।

> **"कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहुँ हित**
> **होई।**

भक्तिकाल में लोक और परलोक का सामंजस्य है। वह हृदय, मन और आत्मा की प्यास शांत कर सकता है। इसमें काव्यत्व, भक्ति, संस्कृति आध्यात्मिकता का मधुर समन्वय है। इस प्रकार भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहना तर्कसंगत एंवा समुचित मालूम पड़ता है।

धन्यवाद